موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 5

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 5

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो!विच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैंःसूर में फूंक मारना,क़्यामत की विशाल चिन्हें,मख्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नमत,आज हम ईन्शा अल्लाह नरक की विशेषण एवं गुणवत्ता पर चर्चा करेंगे।

1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में स्वर्ग एवं नरक पर और इस बात पर ईमान लाना शामिल है कि ये दोनों मख्लूक़(जीव)का स्थायी निवाय हैं,अतःस्वर्ग नमत(आशीर्वाद)का घर है जिसे अल्लाह ने मोमिन एवं मुत्तक़ी(धार्मिक)बंदों के लिए तैयार किया है,और नरक यातना का घर है जिसे अल्लाह तआ़ला ने दो प्रकार के लागों के लिए तैयार किया हैःकाफिर और वह मोमिन जो कबीरा गुनाह(विशाल पाप)को करते हैं।

2.ए मोमिनो!नरक में जाने वाले मोमिनों देने में अल्लाह की नीति यह है कि उन्हें पापों से पवित्र किया जा सके,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उन्हें स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेगा,इस लिए वहां केवल पवित्र हसतियां ही प्रवेश करेंगी,और पाप गन्दगी एवं अपवित्रता से निर्मित है,इस लिए पहले इन पापों से पवित्र करना वाजिब(अनिवार्य)है,यह अल्लाह पाक की नीति है,किंतु अल्लाह तआ़ला बड़े पाप करने वाले एकेश्वरवाद बंदों को क्षमा प्रदान करके उन्हें बिना किसी यातना के भी स्वर्ग में दाखिल कर सकता है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إن الله لا يغفر أن يُشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء﴾

अर्थातःनिसंदेह अल्लाह तआ़ला अपने साथ शरीक किए जाने को क्षमा नहीं करता और उसके अतिरिक्त जिसे चाहे क्षमा प्रदान करता है।

अतःअल्लाह तआ़ला जिसे क्षमा करदे,तो यह उसका कृपा है,और जिसे यातना दे,तो यह उसका न्याय है,रही बात काफिर की तो उसे यातना में डालने में अल्लाह की नीति यह है कि उसी अपमानित किया जाए,इस यातना का **उद्देश्य** उसकी पवित्रता नहीं

होती,क्योंकि ख़बासत(गंदगी)उसके आंतरिक में जड़ जमा चुकी होती है,जो आग से भी दूर नहीं होगी,इस लिए वह स्वेद ही नरक में रहेगा,अल्लाह की शरण।[1]

3.नरक में अनेक प्रकार की यातना होगी,जो हमारे विचार एवं सोच में भी नहीं आ सकती,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّا أَعْتَدْنَالِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنيَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاء كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَالشَّرَابُ وَسَاءتْ مُرْتَفَقًا﴾

अर्थातःनिश्चय हमने अत्याचारों के लिये ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है जिस की प्राचीर(वह दीवार जो नरक के चारो ओर बनाई गई है)ने उन को घेउ लिया है,और यदि वह(जल के लिए)गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा,वह किया ही बुरा पेय है!और वह किया ही बुरा विश्राम है।!

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿إِنَّاللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا * خَالِدِينَفِيهَا أَبَدًا لاَّ يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلا نَصِيرًا * يَوْمَتُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَاأَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولا﴾

अर्थातःअल्लाह ने धिक्कार किया है काफिरों को।और तैयार कर रखी है उनके लिए दहकती अग्नि।वे सदावासी होंगे उस में।नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में,वे कहेंगेःहमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!।

4.ज्ञात हुआ कि काफिर स्वेद के लिए नरक में रहेंगे,किंतु पापी मोमिनों को—यदि अल्लाह ने क्षमा नहीं किया किया—तो एक निश्चित समय तक उसमें यातना चखेंगे,अपने किये हुए पापों के बराबर यातना पाएंगे,जैसे जीभ के पाप,अथवा योनी के पाप,अथवा परिजनों से संबंध तोड़ना,अथवा ह़राम(गाने एवं बातें)सुन्ना,अथवा ह़राम चीज की ओर देखना,अथवा ह़राम धन खाना इत्यादि,अतःसज्दा के स्थानों को आग नहीं छू सके गी,इससे नमाज़ का स्थान स्पष्ट होता है,उनमें से किसी के टखने तक अग्नि पहुंचेगी तो किसी के घुटने तक,किसी की कमर तक पहुंचे गी,जहां नाड़ा बांधा जाता है,और उनमें से किसी की हंस्ली की **हड्डी** तक।[2]इसका अर्थ वह **हड्डी** है जो हलक़ और

---

[1] देखें:"अज़वाउल बयान"में सूरह अलजासिया की इस आयत की व्याख्या﴿ولهم عذاب مهين﴾:आयतः9

[2]इसे मुस्लिम(2845)ने सुमरा बिन जुन्दुब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

गरदन के बीच में होती है,यह इस बात का प्रमाण है कि कठोरता एवं सुगमता के रूप से उनकी यातना विरुद्ध होगा,अतःजब वह अपनी यातना चख लेंगे तो उन्हें नरक से निकाल लिया जाए जबकि वह जल कर काला हो चुके होंगे,उसके बाद उन्हें स्वर्ग के प्रारंभिक भाग में स्थित एक नहर डाला जाएगा,जिसे आबे ह़यात(अमृत)कहा जाता है,अतःवह ऐसे वृद्धि पाएंगे जिसे प्राकृतिक बीज पानी के बहाउ में उगता है।[3]जब पापी मोमिन अपने पापों से पवित्र होजोएंगे तब उन्हें स्वर्ग में प्रवेश किया जाएगा।

5.नरक का आकार बहुत बड़ा है,उसका दृश्य भ्यावक और उसकी झुलस बहुत कठोर है,उसके आकार के बड़े होने का प्रमाण अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है,वह फरमाते हैंःउस दिन नरक को इस अवस्था में लाया जाएगा कि उसमें सत्तर हजार लगाम लगे होंगे,हर लगाम को सत्तर हजार देवदूत पकड़ कर घसीट रहे होंगे।[4]

6.उसका दृश्य भ्यावक होगा,यह अल्लाह तआ़ला के इस फरमान से ज्ञात होता हैः

﴿إنها ترمي بشرر كالقصر﴾

अर्थातःवह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियां भवन के समान।

ज्ञात हुआ कि नरक की चिंगारियॉ अपने आकार में महल के समान है,(आयत में अंकित शब्द) قصرة,قصر का बहुवचन है,जिसका अर्थ वृक्ष के जड़ होते हैं,[5]अतःनरक से उड़ने वाली चिंगारियॉ वृक्ष की जड़ों के समान होगी,हम अल्लाह का शरण चाहते हैं।

7.उसकी झुलस के भीषण ताव का प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस हैः"तुम्हारी दुनिया की अग्नि नरक की अग्नि का सत्तरवॉ(70)अंश है,पूछा गयाःए अल्लाह के रसूल!यह दुनिया की अग्नि ही प्रयाप्त थी।आपने फरमायाःवह अग्नि इस पर उन्हत्तर(69)गुना अधिक कर दी गई है और इसका प्रत्येक भाग दुनिया की अग्नि के जितना गर्म है।[6]

8.ए मुसलमानो!नरक के सात द्वार हैं,उनमें से प्रत्येक द्वार क लिए लोगों का एक विशेष एवं ज्ञात भाग बटा हुआ है,अल्लाह का कथन हैः

---

[3] देखेंःसह़ी बोखारी(7439,7437)और मुस्लिम(182)जिसे अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है।

[4] देखेंःसह़ी मुस्लिम(2724),यह कथन मरफू ह़दीस के स्थान में है,जैसा कि ह़दीस का ज्ञान रखने वाले इससे अवज्ञत हैं।

[5] देखेंःतफसीर इब्ने जरीर त़बरी में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

[6] इसे बोखारी(3265)और मुस्लिम(2843)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

﴿وإن جهنم لموعدهم أجمعين * لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم﴾.

अर्थातःऔर वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।उस(नरक)के सात द्धार हैं,और उन में से प्रत्येक द्धार के लिये एक विभाजित भाग है।

9.नरक वासियों के खाने भी उनके श्रेणी के अनुरूप भिन्न भिन्न होंगे,क्योंकि नरक वासियों की यातना उनके पापों के अनुरूप मात्रा एवं गुणवक्ता में एक दूसरे से भिन्न होगा,कुछ नरक वासियों का खाना पीप होगा।अल्लाह का कथन है:

﴿ولا طعام إلا من غسلين﴾

अर्थातःऔर न कोई भाजन,पीप के सिवा।

ग़िसलीन का अर्थ नरक वासियों के घावों से बहने वाला पीप है।

कुछ नरक वासियों का खाना कांटे वाले वृक्ष होंगे,अर्थात सूखे कांटे वाले पौधे होंगे,अल्लाह ने फरमायाः ﴿ليس لهم طعام إلا من ضريع﴾.

अर्थातःउनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।

कुछ नरक वासियों का खाना थूहर का वृक्ष होगा,अल्लाह फरमाता है:

﴿إن شجرة الزقوم * طعام الأثيم * كالمهل يغلي في البطون * كغلي الحميم﴾

अर्थातः

ज़क़्कूम वह पैड़ है जो नरक की जड़ से निकलता है,और देखने और खाने में बहुत खराब होता है,अल्लाह का फरमान है:

﴿أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم * إنا جعلناها فتنة للظالمين * إنها شجرة تخرج في أصل الجحيم * طلعها كأنه رؤوس الشياطين * فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون﴾

अर्थातःक्या यह अतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष।हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़(तह)से निकलती है।उसके

गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।तो वह(नरकवासी)खाने वाले हैं उस से।फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।

10.जहां तक नरक वासियों के पेय की बात है तो उन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा और उनके सरों पर बहाया जाएगा,इसके माध्यम से उन्हें शरीर के **बाह्य** भागों को भी यातना दी जाएगी और पेट के आंतरिक भागों को भी,जिस से उनकी खालें गल जाएंगी और आंतें कट जाएंगी,अल्लाह ने फरमायाः

﴿فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار يُصب من فوق رؤوسهم الحميم * يُصهر به ما في بطونهم والجلود﴾

अर्थातःतो इन में से काफिरों के लिये ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र,उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उनकी खालें।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः ﴿وسُقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم﴾

अर्थातःतथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड–खण्ड कर देगा उन की ऑतों को।

नरक वासियों की यातना के लिए पेयों के और भी प्रकार होंगे जिन की ओर अल्लाह तआ़ला ने अपने इस कथन में इशारह किया हैः

﴿هذا فليذوقوه حميم وغسَّاق * وآخر من شكله أزواج﴾

अर्थातःयह है।तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।

ग़स्साक़ के अर्थ हैंःनरक वासियों की खालों से पहने वाली पीप।

11.क़्यामत के दिन तीन प्रकार के लोगों को सबसे कठोर यातना दी जाएगी,वे तीन प्रकार के लोग ये हैंःफिरऔन और उसके अनुयायी,बनु इसराइल में से वे लोग जिन्हों ने कुफ किया,और मोनाफेक़ीन(पाखंडिया),इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान हैः

﴿ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب﴾

अर्थातःजिस दिन क़यामत आयेगी(फरमान होगा कि)फिरऔनियों को सबसे कठोर यातना में डालदो।

तथा अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराइल के प्रति फरमायाः

﴿فمن يكفر بعد منكم فإني أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين﴾

अर्थातःफिर उसके पश्चात भी जो कुफ्र(अविश्वास)करेगा,तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा,ऐसा दण्ड कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूंगा।

और अल्लाह तआ़ला ने मोनाफिक़ों(पाखंडियों)के विषय में फरमायाः

﴿إن المنافقين في الدَّرْك الأسفل من النار﴾

अर्थातःनिश्चय मोनाफिक़(द्विधावादी)नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे।

12.क़यामत के दिन सबसे हलके(और कम)यातना वाला व्यक्ति होगा जिस के पांव के नीचे दो अंगारे रखे जाएंगे जिनके कारण उसकी बद्धि खौल रहा होगा।[7]

13.सारे के सारे लोग नरक से गुजरेंगे,चाहे वह मोमिन हो अथवा काफिर,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः ﴿وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا﴾

अर्थातःऔर नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहां गुजरने वाला है,यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

किंतु जिन मोमिनों को अल्लाह तआ़ला मुक्ति देना चाहेगा,उन्हें अग्नि छू भी नहीं सके गी,बल्कि वह उसके ऊपर(पुल)सरात से गुजर जाएंगे और अग्नि उन्हें नहीं छू सके गी,किंतु अल्लाह तआ़ला जिसे यातना देना चाहे गा,चाहे वह पापी मोमिन हो अथवा काफिर,तो पुल सरात से लगे हुऐ आंकड़े(कांटेदार कील)उसे उचक लेंगे और नरक में डाल देंगे,किंतु मोमिनों को उनके पापों के बराबर ही नरक की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात उन्हें वहां से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश कर दिया जाएगा,किंतु काफिरों को स्वेद के लिए नरक में ही रहना होगा,उपरोक्त आयत के अंत में अल्लाह तआ़ला के इस कथन का यही अर्थ हैः ﴿ثم ننجي الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جِثيا﴾

[7] इसे बोखारी(6561)और मुस्लिम(213)ने उ़समान बिन बशीर से वर्णित किया है।

अर्थातःफिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे,तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुंह के बल गिरे हुये।

आयत में आए शब्द جِثيا के अर्थ हैंःघुटनों के बल गिरना,जो कि बैठने के जैसा है,क्योंकि मनुष्य घुटनों के बल उसी समय बैठता है जब उसे पर कोई संकट आती है।[8]

14.नरक वासियों को अत्यंत प्यास की स्थिति में नरक की ओर हांक कर लाया जाएगा,अल्लाह का कथन हैः ﴿ونسوق المجرمين إلى جهنم وِردا﴾

अर्थातःतथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

आयत में आए शब्द وِرد का मूल अर्थ हैःजल के निकट आना,चूंकि जल के मनुष्य प्यास के कारण ही आता है,इस लिए यहां प्यासी समूह पर शब्द وِرد को लाया गया है।

15.उस दिन नरक वासियों के कुछ चिन्ह होंगी जिन से देवदूत उन्हें पहचान लेंगे,जब उन्हें पहचान लेंगे तो उन्हें उनके ललाटों एवं परों से पकड़ कर पूरी शक्ति एवं कठोरता के साथ नरक में फेंक देंगे,अल्लाह की शरण।अल्लाह का कथन हैः

﴿يُعرف المجرِمون بسيماهم فيؤخذُ بالنواصي والأقدام﴾

अर्थातःपहचान लिये जाएंगे अपराधी अपने मुखों से,तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

يُدَعُّونका अर्थ हैःपूरे शक्ति एवं निदयता के साथ उन्हें नरक में प्रवेश किया जाएगा।

16.नरक वासियों को एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें मुंह के बल अग्नि में घसीटा जाएगा,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿يوم يُسحبون في النار على وجوههم ذوقوا مسَّ سقر﴾

[8] देखें:तफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

अर्थातःजिस दिन वे घसीटे जोयेंगे यातना में अपने मुखों के बल(उन से कहा जायेगा कि)चखो नरक की यातना का स्वाद।

नरक वासियों की एक यातना यह भी होगी कि उन्हें अग्नि का वस्त्र पहनाया जाएगा, जैसा कि इस आयत में इसका उल्लेख है: ﴿فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار﴾

अर्थातःतो उन में से काफिरों के लिए ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र।

तथा उन्हें पीतल का वर्स्त्र अग्नि में लपैट कर पहनाया जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन है: ﴿سرابيلهم من قَطِران﴾

अर्थातःउनके वस्त्र तारकोल के होंगे।

سرابيل का अर्थ होता है:क़मीज, قَطران का अर्थ अग्नि में पिघलाया हुआ पीतल है।

नरक वासियों एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें लोहे की हथोड़ी से मारा जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन है: ﴿ولهم مقامع من حديد﴾

अर्थातः

مقامع, مقمعة का बहुवचन है,जो भाला के जैसा लोहे का एक हथियार है जिस से हाथी के सर पर मारा जाता है,आयत में इस का अर्थ लोहे का बड़ा हथोड़ा है,जिस से नरक के दारोगे नरक वासियों को मारेंगे।अल्लाह की शरण।

17.नरक (की अग्नि)—अल्लाह हमें इस से सुरक्षित रखे—देखती और करोध से बिफरती है,धाड़ती और चिंघाड़ती है,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿إذا **رأتهم** من مكان بعيد سمعوا لها **تغيظا وزفيرا**﴾

अर्थातःजब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी,तो सुन लेंगे उस के कोध तथा आवेग की ध्वनि को।

मतलब यह कि नरक की अग्नि काफिरों को ह़श के मैदान में देखे गी तो वे उसके बिफरने की आवाज सुनेंगे,अर्थात उसके खौलने की आवाज,तथा उसके धाड़ने की आवाज और चिंघाड़ने की आवाज सुनेंगे,ये दो प्रसिद्ध ध्वनि है,किंतु उनकी स्थिति को अल्लाह तआ़ला ही जानता है,अल्लाह का कथन है:

(إذا ألقوا فيها سمعوا لها **شهيقا** وهي تفور * تكاد تميز من الغيظ)

अर्थातःजब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।प्रतीत होगा कि फट पड़गी कोध से।

मतलब यह कि वह करोध से फटने जैसा हो रहा होगा,अल्लाह की शरण।

18.नरक की अग्नि भड़कती और बुझती है,अल्लाह का कथन है: ﴿كلما خَبت زدناهم سعيرا﴾.

अर्थातःजब भी वह बुझने लगेगा तो हम उसे और भड़का देंगे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

19.आप पर अल्लाह कृपा करे!अल्लाह तआ़ला ने यह वादा किया है कि नरक को भर देगा,अल्लाह का कथन है: ﴿ولكن حق القول مني لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين﴾.

अर्थातःपरन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि में अवश्य भरूंगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।

20.अल्लाह के बंदो!नरक एक मख़्लूक़(जीव)है(जो अभी भी अस्तित्व में है),इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿واتقوا النار التي أُعدَّت للكافرين﴾

अर्थातःतथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो,ताकि तुम पर दया की जाये।

इस आयत में जो तर्क का बिंदु है वहः﴿أعدت﴾ है।(अर्थात तैयार की गई)

ह़दीस से इस का साक्ष्य यह है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अ़म बिन लोह़य को देखा कि वह नरक में अपनी एड़ियां घसीट रहा था।वह प्रथम व्यक्ति था जिसने इब्राहिम धर्म में परिवर्तन किया और अ़रब द्वीप में मूर्ति पूजा को पचलित किया।[9]

और एक महिला को आपने एक बिल्ली के कारण नरक की यातना में देखा,जिसे उसने बांध रखा था,उसे खिलाया नहीं,और उसको छोड़ा भी नहीं कि पृथ्वी के कीड़े मकोड़े खालेती।[10]

अल्लाह के बंदो!ये बीस चीज़े जिनका उल्लेख हुआ,वे नरक एवं स्वर्ग की विशेषताओं पर ईमान लाने से संबंधित हैं,प्रत्येक मोमिन को चाहिए कि इन से अवज्ञत रहे,ताकि उसके मन में नरक की याद स्वेद ताजा रहे,फलस्वरूप वह पुण्य के कार्यों के लिए तैयार रहे और पापों से,इधर उधर भटकने से और आलसा से दूर रहे।

- हे अल्लाह हमें!क़ब्र की यातना से और नरक की यातना से,जीवन और मौत के प्रलोभन से और मसीह़े दज्जाल के प्रलोभन से तेरा शरण चाहते हैं।
- हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

[9] देखेंःअबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस जिसे बोखारी(3521)और मुस्लिम(2856)ने रिवायत की है।

[10] देखेंःइब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस जिसे बोखारी(2365)और मुस्लिम(2242)ने वर्णन किया है।